preface

प्राक्कथन

बात सन् १९७९, १ सितंबर की है । उन दिनों मैं बंबई के किशनचंद चेल्लाराम कालेज, चर्चगेट में बी.ए. के प्रथम वर्ष की छात्रा थी । मैं राज्यस्तरीय बॅडमिंटन की खिलाड़ी थी और मध्य-रेल्वे की ओर से राष्ट्रीय बॅडमिंटन प्रतिस्पर्धाओं में भाग लिया करती थी । १ सितंबर को जैसे ही मैं अपनी प्रेक्टीस खत्म करके घर लौटी तो टी.वी. पर "राम नाम सत्य है" की आवाज सुनी । मैं दो मिनिट तक अपना सामान हाथ में ही उठाये देखती रही । मुझे समझने में देर नहीं हुई कि टी.व्ही. पर नाटक दिखाया जा रहा है । मैं देखती रही । वह था डा. शंकर शेष का नाटक "चेहरे" । मैं नाटक से अत्यंत प्रभावित हुई । जिंदगी में कुछ कर गुजरने की धुन मुझ पर हावी थी । बॅडमिंटन के क्षेत्र में तो मैं अपना सपना साकार कर ही रही थी । किन्तु शिक्षा-क्षेत्र में भी गंभीर अध्ययन की इच्छा तब जागृत हुई थी । यह इच्छा मेरे मन में सालों तक रही । प्रदीर्घ प्रतिक्षा के बाद वह सुदिन आ ही गया जिस दिन मुझे अपने शोध-प्रबंध के विषय का चुनाव करना था । जब गुरूजनों ने डा. शेष के नाटकों को लेकर शोध-कार्य करने का प्रस्ताव रखा तो मैं फूली नहीं समायी । अत: डा. शेष के जीवन और साहित्य को समग्रस्प से जानने के उद्देश्य से मैं ने "डा. शंकर शेष व्यक्तित्व एवं कृतित्व" को ही अपने शोधप्रबंध का विषय चुना ।

डा. शेष ने नाटक, कहानी, उपन्यास आदि विविध विधाओं में रचनाएँ की हैं । किन्तु उन्हें सबसे अधिक सफलता नाटककार के स्प में ही मिली। सन् १९६० के बाद के प्रयोगधर्मी नाटककारों में डा. शंकर शेष मूर्द्धन्य नाटककार हैं । उन्होंने अपने सीमित रचना-काल में ही समाज, जीवन और मानव चरित्र के विभिन्न पहलुओं को अपनी लेखनी द्वारा मूर्त किया है । मानव जीवन का संचालन मुख्यत: बाह्य परिस्थितियाँ ही करती हैं । इसके परिणामस्वस्प मानव

कभी-कभी तो बाह्य-परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए स्वेच्छा और स्वधर्मानुरूप जिंदगी जीता है या फिर स्वधर्मानुरूप जिंदगी बिताने की अपनी इच्छा को तिलांजली देकर किसी अन्य के हाथों कठपुतली की तरह नाचता रहता है । फलत: उसे या तो बाह्य विरोध का सामना करना पड़ता है या फिर उसके अंतस् में ही द्वन्द्व की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, जिससे वह भीतर ही भीतर खोखला होता जाता है । इस संघर्षमय और विडंबनात्मक बहुआयामी मानव जीवन को परखने और विभिन्न धरातलों पर प्रस्तुत करने का सफल प्रयास ही डा. शंकर शेष की साहित्य-साधना है ।

इस दिशा में अब तक हुआ कार्य :

मूर्धन्य नाटककार और साहित्यकार डा. शेष की रचनाओं पर बहुत कम शोध-कार्य हुआ है । उनकी रचनाओं की अब तक केवल दो आलोचनात्मक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं । एक है डा. सुनीलकुमार लवटे की "नाटककार शंकर शेष" और दूसरी है डा. सुरेश गौतम और डा. वीणा गौतम की "राजपथ से जनपथ नटशिल्पी शंकर शेष" । प्रथम पुस्तक में डा. लवटे ने डा. शेष की समस्त रचनाओं का परिचय दिया हैं । डा. सुरेश गौतम तथा डा. वीणा गौतम की पुस्तक का विषय डा. शेष के केवल नाटक हैं । इसके अतिरिक्त यत्र-तत्र डा. शेष के नाटकों पर आलोचनापरक लेख भी समय-समय पर प्रकाशित हुए हैं । अत: डा. शेष के समग्र साहित्य का सर्वांगिण विवेचन ही प्रस्तुत शोध-प्रबंध का हेतु है और प्रयोजन भी । श्रीमती सुधा शंकर शेष से प्राप्त जानकारी के अनुसार पूना, बंबई, भोपाल, चंदिगढ़ विश्वविद्यालयों में भी डा. शेष की रचनाओं पर शोध कार्य हो रहा है ।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत शोध-प्रबंध को मैंने कुल आठ अध्यायों में विभाजित किया है ।

प्रथम अध्याय में डा. शंकर शेष की संक्षिप्त जीवनी प्रस्तुत की गयी है । किसी भी रचना को समझने के लिए आवश्यक है कि उसके रचनाकार को पूर्णत्व से जाना जाए । रचनाकार को समझने के लिए उसके परिवेश को जानना नितान्त आवश्यक है जिसमें वह पला और बड़ा हुआ । रचना प्रक्रिया एक लंबी क्रिया है जिसमें अनेक घात-प्रतिघात हो सकते हैं । लेखक की मानसिकता को जानना अत्यावश्यक है । डा. नगेंद्र का कथन सटीक ही है कि, "व्यक्ति और उसकी कृति में रक्त का संबंध होता है, अतएव एक का विश्लेषण दूसरे को साथ लिए बिना असंभव है।" रक्त का संबंध होने के कारण रचनाकार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में विभाजन रेखा खींचना, दु:साहस करना ही है । तथापि इस अध्याय में अंतर्गत निम्नलिखित मुद्दोंपर विचार किया गया है, जैसे - जन्म तथा बचपन शिक्षा-अध्यापन-अनुसंधान, विवाह एवं पारीवारिक जीवन, तीन सविस्मरणीय प्रसंग, एक अनपेक्षित घटना, व्यक्तित्व की पहचान के ठोस बिंदु, बहुआयामी व्यक्तित्व के विभिन्न पहलु, बाह्य व्यक्तित्व आदि । डा. शंकर शेष की रचनाएँ तथा उन्हें प्राप्त पुरस्कारादि की सूची भी अध्याय के अंत में दी गयी है ।

डा. शेष का साठोत्तर हिन्दी नाट्य-साहित्य में अपना एक अलग एवं महत्वपूर्ण स्थान है । उनका रचनाकाल सन् १९५५ से ही शुरु होता है । द्वितीय अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक के आरंभ और विकास पर संक्षेप में विचार किया गया है । तत्पश्चात साठोत्तर हिन्दी नाट्य-साहित्य पर विशेष ध्यान केंद्रित करते हुए उसकी कथ्य, शिल्प, एवं स्वगत विशेषताओं के परिप्रेक्ष में डा. शंकर शेष के नाटकों को देखने का प्रयास किया गया है । वर्तमान जन-जीवन विसंगतियों से आक्रांत है । जीवन में जटिलताएँ कई स्तरों पर प्रकट हो चुकी हैं । जटिल जीवन की समस्याएँ भी जटिल हैं । हमारे जीवन में जटिलता इस अर्थ में है कि आज हमारे समक्ष जीवन की जो समस्याएँ हैं, वे जीवन की किसी एक स्तर या किसी एक जीवन-खण्ड को प्रभावित नहीं करती । स्पष्टत: समस्याएँ आज व्यापक

हो उठी हैं । हमारे जीवन की अधिकांश समस्याएँ यदि एक स्तर पर सामाजिक हैं तो दूसरे स्तर पर आर्थिक, तीसरे स्तर पर राजनीतिक, चौथे पर नैतिक, पाँचवे स्तर पर मनोवैज्ञानिक। अत: प्रवृत्तियों, विषय क्षेत्रादि की दृष्टि से साठोत्तर काल के नाटकों का वर्गीकरण काफी जटिल काम हैं और फिर इसकी अपनी सीमाएँ भी होती है । ऐसा होते हुए भी अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से द्वितीय अध्याय के अंत में, मैं ने डा. शेष के नाटकों को उनकी कथ्यगत विशेषताओं के आधारपर वर्गीकृत किया हैं ।

डा. शेष ने कुल बीस मौलिक नाटकों की रचना की है, जिनको मैंने इसप्रकार से विभाजित किया है -

१. पौराणिक तथा ऐतिहासिक नाटक
२. स्त्री-पुरुष संबंधों का नये कोणों से अन्वेषण करनेवाले नाटक
३. सामाजिक जीवन के अनुद्घाटित अंशों का उद्घाटन करनेवाले नाटक
४. समकालीन राजनीति को विषय बनाकर चलनेवाले नाटक ।

उपर्युक्त प्रथम तथा द्वितीय वर्ग के नाटकों का विस्तृतविवेचन क्रमश: तृतिय एवं चतुर्थ अध्यायों में किया गया है और अंतिम दो वर्गों के नाटकों को एक ही अध्याय अर्थात पंचम अध्याय में रखा गया है ।

तृतीय अध्याय में कुल सात नाटकों का विवेचन है, जिनमें छह नाटकों का आधार पौराणिक है तो एक नाटक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया हैं । नाटककार ने इन नाटकों में इतिहास-पुराण की कथा, पात्र, घटना आदि द्वारा समकालीन जीवन की व्याख्या करते हुए उससे संबंधित विभिन्न समस्याओं का निरूपण किया हैं । डा. शेष को रामायण, महाभारत, पुराणादि के पठन-पाठन में बचपन से ही रुचि थी और महाभारत से तो वे विशेषरूप से प्रभावित

थे । यही कारण है कि उनके अधिकतर पौराणिक नाटकों का आधार महाभारत ही है । इस अध्याय में निम्नलिखित सात नाटकों का विवेचन किया गया है -

१. नई सभ्यता नये नमूने २. एक और द्रोणाचार्य ३. अरे ! मायावी सरोवर
४. रक्तबीज ५. राक्षस ६. कोमल गांधार ७. खजुराहो का शिल्पी

उपर्युक्त सभी नाटकों के सविस्तर विवेचन के पश्चात इस अध्याय में निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए "पौराणिक नाटकों में आधुनिक बोध" पर विचार किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय में स्त्री-पुरुष संबंधों को कथ्य बनाकर चलनेवाले नाटकों का अनुशीलन किया गया है । इसमें निम्नलिखित तीन नाटक हैं -

१. रत्नगर्भा २. बिन बाती के दीप ३. घरौंदा ।

उपर्युक्त तीनों नाटक स्त्री-पुरुष संबंधों को लेकर चलते हैं तथापि प्रत्येक रचना इस संबंध पर नयी दृष्टि डालती है । अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए, एक ही विषय क्षेत्र में उभरकर सामने आनेवाले विभिन्न आयमों पर विचार किया गया है ।

पंचम अध्याय में कुल नौ नाटकों का विवेचन है, जिसमें से निम्नलिखित प्रथम आठ नाटक सामाजिक जीवन के अनुद्घाटित अंशों का परिचय करानेवाले नाटक हैं और अंतिम नाटक समकालीन राजनीति को विषय बनाकर चलता है -

१. मूर्तिकार २. तिल का ताड़ ३. बाढ़ का पानी ४. बंधन अपने-अपने
५. फंदी ६. पोस्टर ७. चेहरे ८. आधी रात के बाद ९ कालजयी

इस अध्याय के अंत में भी निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है ।

षष्ठम् अध्याय में डा. शेष के एकांकी तथा अन्य नाटकों का विवेचन किया गया है । नाटककार ने "विवाह मंडप", "हिन्दी का भूत", "त्रिभुज का चौथा कोण", तथा "पुलिया" शीर्षक एकांकी लिखे हैं, तो "बीमारी का इलाज" और "मिठाई की चोरी" नामक बाल नाटक भी लिखे हैं । मराठी तथा हिन्दी दोनों ही भाषाओं पर समान प्रभुत्व होने के कारण उन्होंने अनेक मराठी नाटकों का हिन्दी में अनुवाद भी किया है । उनके कुल चार अनुदित नाटकों का उल्लेख मिलता है । वे हैं - "दूर के दीप", "पंचतंत्र", "एक और गार्बो", "चल मेरे कद्दू ठुम्मक ठुम्म" ।

उपर्युक्त सभी रचनाओं में से दुर्भाग्यवश केवल दो रचनाएँ प्राप्त हुई हैं, यथा - "अजायबघर" और "पंचतंत्र" । अत: इस अध्याय में उपलब्ध रचनाओं का सविस्तर विवेचन और अन्य रचनाओं का यथासंभव परिचय कराया गया है ।

सप्तम अध्याय का विषय डा. शेष का कथा साहित्य है । डा. शेष ने नाटक के अतिरिक्त कहानी और उपन्यासों की भी रचना की है । उन्होंने "चेहरे", "ओले", "एक प्याला काफी" आदि कहानियाँ लिखी हैं जिनमें केवल "चेहरे" उपलब्ध हुई है । उनके कुल चार उपन्यास हैं, - "तेंदु के पत्ते", "खजुराहो की अलका", "चेतना" और "धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे" [अपूर्ण] । उपन्यास "तेंदु के पत्ते" अनुपलब्ध होने के कारण उसका विवेचन नहीं हो पाया है । प्राप्त रचनाओं का विवेचन करते हुए नाटककार में छिपे उपन्यासकार को पहचानने की इस अध्याय में कोशिश की गयी है।

अष्टम अध्याय में उपसंहार प्रस्तुत किया गया है । प्रबंध के अंत में संदर्भ ग्रंथों, पत्र-पत्रिकाओं आदि की सूची दी गयी है ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध की मौलिकता :

डा. शंकर शेष के साहित्य पर बहुत कम कार्य हुआ है । अब तक जितने भी शोध-प्रबंध प्रस्तुत किये गये हैं, उनका विषय डा. शंकर शेष का नाट्य-साहित्य ही रहा है । लेकिन इस शोध-प्रबंध में पहली बार डा. शंकर शेष के व्यक्तित्व के अंकन के साथ उनके समग्र साहित्य का विवेचन प्रस्तुत किया गया है । डा. शंकर शेष ने नाटकों के अतिरिक्त कहानी, उपन्यास, बाल नाटक, एकांकी, अनुदित नाटक आदि की रचना की है । प्रस्तुत शोध-प्रबंध में उनकी समस्त रचनाओंका विवेचन किया गया है ।

डा. शेष का साठोत्तर हिन्दी नाटककारों में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है । अब तक प्रस्तुत किये गये शोध-प्रबंधों में उनके नाट्य-साहित्य को रचनाक्रमानुसार विभाजित करके अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । मैंने पहली बार उनकी नाट्य-रचनाओं को साठोत्तर हिन्दी नाटकों की कथ्यगत विशेषताओं के आधारपर वर्गीकृत करके, उनका विवेचन प्रस्तुत किया है ।

प्रबंध में डा. शेष के साहित्य की मूल संवेदना की खोज की ईमानदार कोशिश की गयी है ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध की सीमा :

प्रस्तुत शोध प्रबंध में डा. शंकर शेष की हर एक रचना का विवेचन-विश्लेषण अभिष्ट था । लेकिन अनेकानेक प्रयत्नों के उपरान्त भी डा. शेष की कुछ रचनाएँ मुझे उपलब्ध नहीं हो सकीं । अत: अनुपलब्ध रचनाओं का विवेचन नहीं हो पाया, इस बात का मुझे अत्यंत खेद है और इस प्रबंध की यह सीमा भी है।

शोध प्रबंध लिखते समय अत्यंत सतर्कता बरती गयी है, तथापि कुछ त्रुटियाँ

Karnatak University Library DHARWAD.

होना संभव है ।

आभार :

गत साढ़े चार वर्षों से मैं शोध-कार्य में निरंतर संलग्न हूँ । इस शोध-कार्य को संपन्न करने में शोध निर्देशिका डा. नंदिनी गुंडुराव ने अपने मौलिक चिंतन तथा आत्मीयतापूर्ण सहयोग से मार्गदर्शन किया । अत्यंत विषम स्थितियों में से गुजरते हुए भी मानसिक संतुलन बनाये रख कर इस शोध कार्य को पूरा करने के लिए उन्होंने मुझे समय-समय पर प्रोत्साहित किया, इसके लिए मैं उनकी सदैव ऋणी रहूँगी।

डा. चन्दुलाल दुबे [भूतपूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय] ने मुझे इस शोध-कार्य को पूरा करने में निरंतर प्रोत्साहन दिया । इसके लिए मैं जीवनभर उनकी आभारी रहूँगी । डा. टी. आर. भट्ट, डा. एस्. सी. चुलकीमठ, डा. एस्. एस्. मुम्मीगट्टी के प्रति भी मैं आभारी हूँ, जिनके सहयोग से ही यह शोध-कार्य संपन्न हो सका ।

डा. सुनीलकुमार लवटे [अध्यक्ष हिन्दी विभाग, महावीर कालेज, कोल्हापूर] के प्रति मैं विशेष आभारी हूँ, जिन्होंने नाटक "बंधन अपने-अपने" की प्रति उपलब्ध करा के मेरे शोध कार्य में सक्रीय सहयोग दिया ।

श्रीमती सुधा शंकर शेष से हुए साक्षात्कार मेरे जीवन में चिरस्मरणीय रहेंगे । श्रीमती जीने मुझे डा. शेष के अप्रकाशित नाटकों की पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध कराकर तथा प्रकाशित किन्तु अनुपलब्ध उपन्यास की प्रति देकर मेरे शोध-कार्य में सक्रीय सहयोग दिया है । उनके अमूल्य सहयोग के लिए मैं उनकी सदैव आभारी रहूँगी ।

मैं उन समस्त विद्वानों तथा आलोचकों के प्रति कृतज्ञ हूँ जिनके ग्रंथों तथा

लेखों से मैं लाभान्वित हुई हूँ ।

श्री. व्ही. एस्. साठये ने प्रबंध के टंक-लेखन का कार्य मनोयोग एवं तत्परतापूर्वक संपन्न किया जिसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देती हूँ ।

इस शोध-कार्य को पूरा करने में मेरे आप्त संबंधी एवं मेरे परिवार जन भी प्रमुख सहयोगी रहे हैं । विशेषरूप से मेरे स्व. श्वसुर, पति तथा दोनों पुत्रों के सस्नेह सहयोग को मैं कभी भूल नहीं सकती । वस्तुत: मेरे परम आदरणीय पिताजी [श्री. जी. डी. काणे] की निरंतर प्रेरणा और आत्मीयता का ही प्रतिफलन है कि मैं प्रस्तुत शोधप्रबंध पूरा कर सकी । उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना उनके स्नेह का गलत मूल्यांकन ही होगा । बस उनका स्नेह और सहयोग इसीतरह सदैव बना रहे ।

शोधकर्त्री

सुनिता मंजनबैल

[श्रीमती सुनिता मंजनबैल]

कर्नाटक विश्वविद्यालय
धारवाड

दिनांक : 25-1-1991